K. Nand M.A II Sem (1)

अन्य दूसरे संस्कृतियों में करके मानव व्यवहार के बारे में ठीक-ठीक सामान्यीकरण करने में सहायता प्राप्त की जाती है, जिससे मानव के सामान्य प्रकृति को समझने में अधिक मदद मिलती है। यदि शोधकर्त्ता यह जान पाते हैं कि किसी खास संस्कृति में खास प्रकार के व्यवहार होते हैं और उन्होंने खास सांस्कृतिक शोध के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि अन्य कई संस्कृतियों में भी ऐसा ही होता है, तो इससे उन्हें मानव प्रकृति को समझने एवं उसके बारे में विश्वास के साथ सामान्यीकरण करने में मदद मिलती है। उदाहरणस्वरूप- यदि शोधार्थी किसी संस्कृति का अध्ययनकर यह निष्कर्ष पर पहुँचता है कि लोगों में अधिक अनुचित कुंठा होने से उनमें आक्रामक व्यवहार की तीव्रता में वृद्धि होती है और इस ढंग की तथ्य की पुष्टि वह अपने अध्ययन के आधार पर भी कर सकते में समर्थ होते हैं, तो वे आसानी से यह सामान्यीकरण कर लेंगे कि मानव प्रकृति ऐसा है कि यदि व्यक्ति किसी प्रकार के कुंठा (विशेषकर अनुचित) से जब अधिक समय तक ग्रसित होता है, तो उसके व्यवहार में आक्रामकता उत्पन्न हो जाती है।

(2) अन्तर सांस्कृतिक शोध किसी भी सिद्धान्त की जाँच करने के लिए एक वास्तविक जिन्दगी का प्रयोगशाला है। प्रयोगात्मक मनोविज्ञानियों द्वारा किसी प्रयोगशाला में मानव व्यवहारों की जाँच की जाती है। लेकिन अन्तर सांस्कृतिक शोध प्रविधि में शोधार्थी ~~[illegible]~~ व्यवहारों की तथ्यों की जाँच ताकि के वास्तविक जीवन रूपी प्रयोगशाला में उनके बारे में बतलाये गए विभिन्न सिद्धान्तों की जाँच करके करते हैं और सिद्धान्तों को यथासंभव उन्नत बनाने की

K. Hangal M.A. II Sem (2)

कोशिश करते हैं। क्लाइन (Kline, 1994) महोदय के मतानुसार क्रास सांस्कृतिक या अन्तर सांस्कृतिक शोध मानव व्यवहार के बारे में विभिन्न सिद्धान्तों की जाँच प्राकृतिक जिन्दगी रूपी प्रयोगशाला में करके उसमें वास्तविकता तथा उत्सुकता लाया जाता है। फलतः व्यक्तियों के व्यवहारपरक तथ्यों को समझने के पश्चात उसका सामान्यीकरण करने में सक्षम हो पाते हैं।

(3) क्रास सांस्कृतिक शोध प्रविधि का मनोविज्ञानियों द्वारा एक प्रमुख गुण यह भी बतलाया गया है कि इस शोध विधि के माध्यम से स्थापित सिद्धान्तों की जाँच के साथ-साथ नए-नए सिद्धान्तों की स्थापना तथा समय-समय पर इसमें उपयुक्त सुधार करने में भी मदद मिलती है। क्रास सांस्कृतिक शोधों से मानवीय व्यवहार के बारे में उन तथ्यों का पता चलता है जो भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में सही पाये जाते हैं। इन तथ्यों को एकत्र करके तथा उसे एक क्रमबद्ध, तार्किक एवं वस्तुनिष्ठ सूत्र में बाँध कर एक नया सिद्धान्त का रूप दिया जाता है। सिद्धान्त निर्माण के पश्चात इसे आधार मानकर नयी-नयी परिकल्पनाओं का निर्माण कर नये-नये तथ्यों की खोज की जाती है।

(4) क्रास सांस्कृतिक शोध का एक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यही एक ऐसी शोध प्रविधि है जिसमें भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के व्यक्तियों के व्यवहारों का तुलनात्मक अध्ययन करने का मौका मिलता है। ऐसा लाभ अन्य किसी भी तरह की शोध विधि में नहीं है। एक मनोविज्ञानी क्रास-सांस्कृतिक शोध प्रविधि के आधार पर विभिन्न संस्कृति के लोगों के व्यवहारों का तुलनात्मक अध्ययन करके यह निश्चित कर पाते हैं कि क्यों एक व्यवहार एक संस्कृति में अच्छा समझा जाता है और वही व्यवहार दूसरी